शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92–97

समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और प्रतिरोध का स्वर : ब्रज श्रीवास्तव के काव्य का अनुशीलन

आनंद सौरभ उपाध्याय
शोधार्थी
भाषा विभाग, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
डॉ. मधु प्रिया
शोध-निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापक हिन्दी
भाषा विभाग रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

Received– 27 September - 2026
Accepted– 29 September - 2026
Published– 30 September-2026

Corresponding Author-
आनंद सौरभ उपाध्याय
शोधार्थी, भाषा विभाग, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

DOI- https://doi.org/10.67275/SU.2026.041524
Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।
OPEN ACCESS Shodh Utkarsh CC-BY 4.0

सारांश-समकालीन हिंदी कविता अपने युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वास्तविकताओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त साहित्यिक माध्यम है। आज के समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता, बाजारवादी प्रवृत्तियों का विस्तार, पर्यावरण का निरंतर क्षरण, लोकतांत्रिक आदर्शों के सामने उत्पन्न चुनौतियाँ तथा मानवीय संबंधों में हो रहे बदलाव साहित्यिक विमर्श के महत्त्वपूर्ण विषय बन चुके हैं। ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ इन परिस्थितियों का संवेदनशील अवलोकन करते हुए आम आदमी के अनुभवों, संघर्षों और जीवनगत जटिलताओं को काव्यात्मक स्वर प्रदान करती हैं। उनकी रचनाओं में सत्यनिष्ठा, वैचारिक स्वतंत्रता, असहमति की स्वीकृति, श्रमशील वर्ग के प्रति सहानुभूति, प्रकृति-संरक्षण की भावना तथा मानवीय और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता विशेष रूप से अभिव्यक्त होती है।
प्रस्तुत शोधपत्र में ब्रज श्रीवास्तव की चयनित कविताओं के माध्यम से उनकी सामाजिक दृष्टि, मानवीय संवेदनशीलता, व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति और प्रतिरोधपरक चेतना का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। 'सच बोला तो', 'दुनिया का बदन', 'हम अपने दस्तावेज', 'एक भी दिन', 'बहेलिया', 'आदिवासी', 'विरोध' और 'काम वाली बाई' जैसी रचनाएँ इस विश्लेषण का प्रमुख आधार हैं। इन कविताओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कवि के लिए कविता मात्र भावनाओं और सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि वह सामाजिक विसंगतियों को उजागर करने, जीवन की वास्तविकताओं पर विचार करने तथा मानवीय गरिमा और संवेदनशीलता को बनाए रखने का एक प्रभावी माध्यम भी है।
बीज शब्द: समकालीन हिंदी कविता, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना, प्रतिरोध, लोकतांत्रिक मूल्य, श्रमजीवी वर्ग, पर्यावरण।

प्रस्तावना- साहित्य और समाज के बीच गहरा तथा अविच्छिन्न संबंध होता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल अपने समय की परिस्थितियों को अभिव्यक्त करता है, बल्कि सामाजिक जीवन में विद्यमान अंतर्विरोधों, परिवर्तनों और चुनौतियों की पड़ताल भी करता है। किसी रचनाकार की साहित्यिक चेतना को समुचित रूप से समझने के लिए उसके व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक परिवेश और वैचारिक दृष्टिकोण का विश्लेषण आवश्यक है। समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक यथार्थ का चित्रण राजनीतिक घटनाओं तक सीमित न रहकर सामान्य जनजीवन की समस्याओं, व्यक्ति के मानसिक संघर्षों, आर्थिक असुरक्षाओं तथा मानवीय संबंधों में उत्पन्न जटिलताओं तक विस्तृत हुआ है।
ब्रज श्रीवास्तव की काव्य-दृष्टि इसी व्यापक सामाजिक और मानवीय परिप्रेक्ष्य में विकसित होती दिखाई देती है। उनकी कविताओं में व्यक्तिगत अनुभूतियों और सामूहिक जीवन की वास्तविकताओं के बीच अंतर्संबंध स्थापित होता है। वे दैनिक जीवन की साधारण प्रतीत होने वाली घटनाओं के भीतर निहित सामाजिक अर्थों और मानवीय संवेदनाओं को उजागर करते हैं। विशेष रूप से उन व्यक्तियों और समुदायों के अनुभव उनकी काव्य-दृष्टि में महत्त्व प्राप्त करते हैं, जिनकी समस्याएँ अक्सर मुख्यधारा के सामाजिक विमर्श में अपेक्षित स्थान नहीं प्राप्त कर पातीं।
ब्रज श्रीवास्तव की रचनाओं में सत्य की अभिव्यक्ति से जुड़ी कठिनाइयाँ, स्वार्थपरक व्यवहार, बाजारवादी मानसिकता, पर्यावरणीय संकट, श्रम के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों का क्षरण प्रमुख विषयों के रूप में उभरते हैं। इन समस्याओं के प्रति उनकी प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष आक्रोश या नारेबाजी के बजाय व्यंग्यात्मक कथन, सहज भाषा, प्रतीकात्मक बिंबों और जीवन से जुड़े अनुभवों के माध्यम से व्यक्त होती है। उनकी कविता की यही विशेषता उसे विचारोत्तेजक बनाती है। वह पाठक को सामाजिक विसंगतियों से परिचित कराने के साथ-साथ प्रचलित मान्यताओं, व्यक्तिगत आचरण और नैतिक दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए भी प्रेरित करती है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92–97

सत्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता-लोकतंत्र की मजबूती सत्यनिष्ठा, स्वतंत्र विचार और अभिव्यक्ति की स्वायत्तता जैसे मूल्यों पर निर्भर करती है। एक प्रगतिशील समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बात कहने, सामाजिक मान्यताओं पर प्रश्न उठाने और असहमति प्रकट करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। हालांकि, व्यवहार में सत्य को सामने रखने वाले लोगों को कई बार विरोध, मानसिक दबाव, धमकियों तथा सामाजिक उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियाँ व्यक्ति के आत्मविश्वास को प्रभावित करती हैं और उसे अपने विचार व्यक्त करने से रोक सकती हैं। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'सच बोला तो' इसी विरोधाभासी सामाजिक स्थिति को उजागर करती है। कवि के अनुसार, असहमति को सहन करने के बजाय उसे दबाने का प्रयास लोकतांत्रिक चेतना और विचारों की स्वतंत्रता के लिए बाधक है। सत्य के पक्ष में खड़े व्यक्ति के अनुभवों के माध्यम से यह कविता नैतिक दृढ़ता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की आवश्यकता को रेखांकित करती है। साथ ही, यह पाठकों को निर्भीक होकर अपनी बात रखने और अन्यायपूर्ण परिस्थितियों के विरुद्ध विवेकपूर्ण ढंग से आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है।

"पाँचवीं बार बोला
तो धमकी दी गई
छठी बार बोला तो
मुझे अलग कर दिया गया।"[1]

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सत्य के पक्ष में खड़े व्यक्ति को झेलने पड़ने वाले सामाजिक दबावों और प्रतिकूल परिस्थितियों को उजागर करते हैं। सत्य व्यक्त करने पर उसे पहले धमकियों का सामना करना पड़ता है और अंततः समाज से अलग-थलग कर दिया जाता है। घटनाओं का यह क्रम दर्शाता है कि किस प्रकार असहमति को सहजता से स्वीकार करने के बजाय उसे दबाने तथा विरोधी विचारों को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। कविता की विशेषता यह है कि इसमें सत्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे गंभीर प्रश्नों को सैद्धांतिक चर्चा तक सीमित न रखकर व्यावहारिक जीवन के अनुभवों से जोड़ा गया है। कवि इस स्थिति के माध्यम से सामाजिक सहिष्णुता और लोकतांत्रिक मूल्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब किसी व्यक्ति को प्रश्न उठाने या अपनी स्वतंत्र राय व्यक्त करने के कारण बहिष्कार का सामना करना पड़ता है, तब समाज में स्वतंत्र चिंतन की संभावनाएँ सीमित होने लगती हैं। इस प्रकार कविता असहमति के सम्मान और विचारों की स्वतंत्रता की अनिवार्यता को रेखांकित करती है।

पर्यावरणीय संकट और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व-आधुनिक विकास की प्रक्रिया ने जहाँ मानव जीवन को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं, वहीं प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित उपयोग, बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं को भी गंभीर बनाया है। इन परिस्थितियों ने प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक संबंधों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता उत्पन्न की है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'दुनिया का बदन' इसी पर्यावरणीय संकट को संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। कवि प्रकृति की बिगड़ती स्थिति को मानवीय अनुभवों से जोड़कर एक प्रभावशाली रूपक रचते हैं, जिसके माध्यम से पर्यावरण के प्रति मानवीय उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता का बोध कराया गया है।

"पृथ्वी को बुखार है/कोई नापे इसका तापमान
और रखे आहिस्ते से/सर पर पानी की पट्टी।"[2]

कवि पृथ्वी की तुलना एक अस्वस्थ मनुष्य से करके पर्यावरणीय संकट को संवेदनात्मक गहराई प्रदान करते हैं। 'बुखार', 'तापमान' और 'पानी की पट्टी' जैसे सहज शब्दों के माध्यम से प्रकृति की बिगड़ती दशा को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। इस मानवीय रूपक के कारण पृथ्वी केवल एक भौतिक ग्रह न रहकर ऐसी जीवंत सत्ता के रूप में सामने आती है, जिसके स्वास्थ्य और सुरक्षा की चिंता करना मनुष्य का दायित्व है। कविता प्रकृति तथा मानव जीवन के बीच विद्यमान गहरे संबंध को रेखांकित करती है और यह बोध कराती है कि पर्यावरणीय असंतुलन का प्रभाव संपूर्ण जीव-जगत पर पड़ता है। कवि का दृष्टिकोण इस समस्या को वैज्ञानिक तथ्यों और आँकड़ों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि इसे मानवीय अस्तित्व, जीवन की निरंतरता और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जोड़ता है। इस प्रकार कविता पर्यावरण-संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के साथ-साथ प्रकृति के प्रति मनुष्य की नैतिक जिम्मेदारी को भी उजागर करती है।

नैतिक दृढ़ता और अवसरवाद का विरोध

समाज में प्रतिष्ठा, प्रभाव और निजी स्वार्थ की पूर्ति की बढ़ती चाह कई बार व्यक्ति को अपने सिद्धांतों तथा नैतिक आदर्शों से विमुख कर देती है। ऐसे में व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देने के कारण ईमानदारी और मूल्यनिष्ठा कमजोर पड़ने लगती हैं। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'जो झूठ बोले अक्सर' इसी प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाती है और विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मूल स्वभाव तथा नैतिक प्रतिबद्धताओं को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल देती है। कवि की दृष्टि में व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसकी बाहरी सफलता से नहीं, बल्कि उसके आचरण, विचारों और सिद्धांतों के प्रति निष्ठा से निर्धारित होती है। इस प्रकार कविता अवसरवाद के स्थान पर नैतिक दृढ़ता और आत्मसम्मान को महत्त्व प्रदान करती है।

"हम उनकी तरफदारी करेंगे
जो तुम जैसे लोगों के साथ रहकर भी
नहीं बदलते अपना स्वभाव।"[3]

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि उन व्यक्तियों के प्रति अपनी पक्षधरता प्रकट करते हैं, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों और मूल्यों से विचलित नहीं होते। उनकी दृष्टि में नैतिकता का वास्तविक अर्थ केवल सत्य का समर्थन करना नहीं, बल्कि कठिन समय में भी विवेक, आत्मसम्मान और सिद्धांतनिष्ठा को बनाए रखना है। कविता में अपने स्वभाव के प्रति अडिग रहने की भावना व्यक्ति की नैतिक दृढ़ता और आंतरिक स्वतंत्रता को अभिव्यक्त करती है। कवि यह संकेत देते हैं कि किसी व्यक्ति का वास्तविक मूल्यांकन उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा, पद अथवा प्रभाव के आधार पर नहीं, बल्कि उसके व्यवहार और नैतिक आचरण के माध्यम से किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में कविता स्वार्थपरता, अवसरवाद और चापलूसी जैसी प्रवृत्तियों का विरोध करती है। साथ ही, यह व्यक्ति को बाहरी दबावों से अप्रभावित रहते हुए अपने विवेक के अनुसार जीवन जीने तथा स्वतंत्र विचारधारा को बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करती है।

आत्मबोध और मनुष्य का आंतरिक संसार-किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व और जीवनानुभवों को केवल उसके बाहरी परिचय, उपलब्धियों या सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। उसके अंतर्मन में संचित स्मृतियाँ, विचार, भावनाएँ और मानसिक संघर्ष भी उसकी पहचान को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92–97

मनुष्य का आंतरिक संसार अनेक ऐसी अनुभूतियों से निर्मित होता है, जिन्हें किसी लिखित अभिलेख में पूर्णतः दर्ज करना संभव नहीं है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'हम अपने दस्तावेज' इसी आंतरिक अनुभूति और आत्मबोध की महत्ता को सामने लाती है। कवि इस रचना के माध्यम से संकेत करते हैं कि व्यक्ति के वास्तविक जीवन का परिचय केवल बाहरी प्रमाणों से नहीं, बल्कि उसके विचारों, अनुभवों और संवेदनाओं से भी प्राप्त होता है। इस प्रकार कविता मनुष्य के अंतर्मन की जटिलता तथा उसकी व्यक्तिगत अनुभूतियों के महत्त्व को रेखांकित करती है।

"कोई दस्तावेज नहीं रह जाता
जिसमें ये दर्ज होता हमने किस क्षण में
क्या-क्या सोचा था अब तक के जीवन में
हम ही हुआ करते हैं अपने दस्तावेज किसी के लिए।"[4]

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि लिखित अभिलेखों और व्यक्ति के निजी अनुभवों के मध्य विद्यमान भिन्नता को उजागर करते हैं। दस्तावेज किसी व्यक्ति के जीवन से संबंधित घटनाओं तथा तथ्यों का विवरण प्रस्तुत कर सकते हैं, लेकिन उसके मन में उत्पन्न होने वाले विचारों, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और आंतरिक द्वंद्वों को संपूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकते। मनुष्य की वास्तविक पहचान उसके अनुभवों, स्मृतियों, संवेदनाओं और जीवन के प्रति दृष्टिकोण से निर्मित होती है। ब्रज श्रीवास्तव इस रचना में व्यक्ति के अस्तित्व को उसकी बाहरी सामाजिक पहचान तक सीमित न रखकर उसके अंतर्मन और आत्मचेतना को भी महत्त्व देते हैं। उनके अनुसार, मानवीय व्यक्तित्व की जटिलता को समझने के लिए उसके आंतरिक संसार को जानना आवश्यक है। इस प्रकार कविता व्यक्ति की मानसिक अनुभूतियों और आत्मपरक चेतना को महत्त्व प्रदान करते हुए मनुष्य के व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक पक्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है।

सभ्यता, हिंसा और मानवीय संवेदना-विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में निरंतर उन्नति तथा जीवन को सुविधाजनक बनाने वाले साधनों के विस्तार के बावजूद मानवीय समाज हिंसा, घृणा और असहिष्णुता जैसी समस्याओं से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। आधुनिक सभ्यता ने भौतिक विकास के अनेक आयाम स्थापित किए हैं, लेकिन मानवीय व्यवहार में अपेक्षित संवेदनशीलता और सह-अस्तित्व की भावना का पर्याप्त विकास नहीं हुआ है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'एक भी दिन' इसी विरोधाभासी स्थिति को उजागर करती है। कवि आधुनिक समाज की प्रगति और मनुष्य के आचरण के बीच मौजूद अंतर को रेखांकित करते हुए सभ्यता की वास्तविक सार्थकता पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

"इतने साल हुए सभ्य हुए
आज़ाद हुए भी गुजर गया अच्छा समय
अब भी मनुष्य ने मनुष्य को
मार डालना नहीं छोड़ पाया।"[5]

इस कविता में कवि सभ्यता की प्रगति और मानवीय आचरण के मध्य विद्यमान विरोधाभास को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक और भौतिक सुविधाओं का व्यापक विस्तार हुआ है, फिर भी समाज हिंसा, घृणा और असहिष्णुता जैसी प्रवृत्तियों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका है। कवि की चिंता केवल मनुष्य द्वारा की जाने वाली शारीरिक हिंसा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह दूसरों के प्रति बढ़ती संवेदनहीनता, उपेक्षा और उनके अस्तित्व के प्रति अनादर को भी अपने विचार का विषय बनाते हैं। उनके अनुसार, विकास की वास्तविक सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती है, जब उसके साथ मानवीय मूल्यों, करुणा और पारस्परिक सम्मान का भी विस्तार हो। इस दृष्टि से कविता सभ्यता की प्रचलित अवधारणा पर प्रश्न उठाती है और यह स्थापित करती है कि किसी समाज की वास्तविक उन्नति का आकलन उसकी भौतिक उपलब्धियों से अधिक उसके मानवीय व्यवहार और नैतिक चेतना के आधार पर किया जाना चाहिए।

रचनात्मक स्वतंत्रता और आत्मसम्मान-साहित्य के क्षेत्र में किसी लेखक की वास्तविक पहचान केवल सामाजिक स्वीकृति, प्रसिद्धि अथवा संस्थागत प्रतिष्ठा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी स्वतंत्र चिंतन-क्षमता और अपनी सृजनात्मक दृष्टि के प्रति प्रतिबद्धता भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'न सही' में इसी विचार को अभिव्यक्ति मिली है, जहाँ रचनात्मक स्वायत्तता और वैचारिक निष्ठा के महत्त्व को रेखांकित किया गया है।

"लोगों के दृश्य में रहने से
कोई नहीं रोक सकता
ऐसे कुछ और दृश्यों में भी
मेरी तस्वीर रहेगी।"[6]

इस संदर्भ में 'तस्वीर' रचनाकार की साहित्यिक पहचान और सृजनात्मक अस्तित्व का प्रतीक बनकर उभरती है। कवि का आशय है कि किसी विशेष मंच, संस्था अथवा समूह से स्वीकृति प्राप्त न होना लेखक की समग्र रचनात्मक उपस्थिति को नकारने का आधार नहीं बन सकता। साहित्यिक जगत अनेक प्रकार के अनुभवों, विचारों और दृष्टिकोणों के समन्वय से विकसित होता है। अतः स्वतंत्र चिंतन करने वाले रचनाकार की महत्ता को किसी एक प्रकार की मान्यता या स्वीकृति तक सीमित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार, कविता आत्मसम्मान और रचनात्मक स्वाधीनता की प्रतिष्ठा करते हुए साहित्य में वैचारिक बहुलता तथा विविध दृष्टियों के सम्मान की अनिवार्यता को भी स्पष्ट करती है।

परिवर्तन की आकांक्षा और साहस-सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में केवल मौजूदा परिस्थितियों और समस्याओं को समझ लेना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके विरोध में आवाज़ उठाने तथा परिवर्तन की दिशा में सक्रिय पहल करने का साहस भी आवश्यक होता है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'दो चार पागल हों' में ऐसे व्यक्तियों के महत्त्व को रेखांकित किया गया है, जो प्रचलित रूढ़ियों और स्थापित मान्यताओं की सीमाओं को लाँघकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं।

"ईमान को पहचान पागल ही
दिलाएंगे
इश्क में ईमानदारी पागल ही
निभा सकते हैं।"[7]

इन पंक्तियों में 'पागल' शब्द का अर्थ असामान्य मानसिक स्थिति से नहीं, बल्कि साहस, दृढ़ संकल्प और रूढ़िगत विचारों से स्वतंत्र चेतना से है। कवि का संकेत है कि स्वार्थपरता और सुख-सुविधाओं के प्रति अत्यधिक आकर्षण व्यक्ति की जोखिम उठाने तथा नई राह अपनाने की क्षमता को सीमित कर सकता है। इसके विपरीत, अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए भी निरंतर प्रयास करता रहता है। इस प्रकार, कविता सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ नैतिक दृढ़ता और निर्भीकता के महत्त्व को भी स्थापित करती है। कवि के अनुसार, समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए ऐसे सजग और साहसी व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो प्रचलित मान्यताओं की आलोचनात्मक समीक्षा कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें चुनौती देने से न हिचकें।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92–97

उपभोक्तावाद और बाजार की चालाकियाँ-समकालीन समाज में बाजार की भूमिका केवल वस्तुओं के लेन-देन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह मानवीय इच्छाओं, जरूरतों और जीवन-पद्धति को भी गहराई से प्रभावित करने लगा है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'बहेलिया' बाजार की इसी दोहरी प्रकृति को प्रतीकात्मक ढंग से उजागर करती है, जिसमें आकर्षण और प्रलोभन के माध्यम से व्यक्ति को अपने प्रभाव में लेने के साथ-साथ उसके शोषण की प्रवृत्ति भी निहित है।

"जैसे ही निकलोगे बाहर
वह तुम्हारी जेब में मारेगा गुलेल
ले जायेगा रुपया
तुम शिकार हो चुके हो।"[8]

इस कविता में 'बहेलिया' उस बाजारवादी तंत्र का प्रतीक है, जो विभिन्न आकर्षणों और उपभोक्ता की इच्छाओं को माध्यम बनाकर व्यक्ति को अपने जाल में फँसा लेता है। 'जेब में गुलेल मारना' आर्थिक शोषण को अभिव्यक्त करने वाला एक सरल, किंतु अर्थपूर्ण बिंब है। बाजार व्यक्ति की वास्तविक जरूरतों और कृत्रिम इच्छाओं के बीच अंतर को धुँधला कर देता है तथा निरंतर नई आकांक्षाओं को जन्म देकर उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। कवि का उद्देश्य खरीदारी की प्रक्रिया की निंदा करना नहीं, बल्कि बाजार के उस प्रभाव की आलोचना करना है, जिसके कारण व्यक्ति की विवेकशीलता और आर्थिक स्वायत्तता धीरे-धीरे कमजोर होने लगती हैं।

प्रकृति, आदिवासी जीवन और सांस्कृतिक स्मृति- प्रकृति और मानव जीवन के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या में आदिवासी जीवन-दृष्टि एक महत्त्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है। आधुनिक विकास की अवधारणा अनेक बार प्रकृति के साथ मनुष्य के पारंपरिक, आत्मीय और सह-अस्तित्व पर आधारित संबंधों को अनदेखा कर देती है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'आदिवासी' सभ्यता की प्रगति और उसके प्राकृतिक आधार के बीच विद्यमान संबंधों को उजागर करते हुए इस बात पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि मानवीय विकास की प्रक्रिया में प्रकृति की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है।

"अपने सबसे पहले पुरखे के लिए
हम कृतज्ञ हुए
जिसने धरती पर रहने के लिए
जंगल चुने।"[9]

इन पंक्तियों में प्रकृति और आदिवासी जीवन के पारस्परिक संबंध को गरिमा तथा संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। जंगल को अपनाना मात्र आवास का चयन नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके जीवन जीने की एक विशिष्ट जीवन-पद्धति को भी अभिव्यक्त करता है। इस संदर्भ में कवि आधुनिक मनुष्य को उसकी सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक परिवेश के प्रति निहित दायित्वों का बोध कराते हैं। कविता की यह दृष्टि आदिवासी समुदायों को केवल विकास संबंधी विमर्श का विषय मानने के बजाय उनकी जीवन-दृष्टि, परंपराओं और मूल्यों को समझने की आवश्यकता पर बल देती है। इस प्रकार, कविता प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, पारस्परिक सम्मान और संतुलित जीवन-दृष्टि के महत्त्व को रेखांकित करती है।

सांस्कृतिक गौरव और नैतिक आचरण का विरोधाभास- सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की भावना तभी वास्तविक अर्थ ग्रहण करती है, जब व्यक्ति उससे जुड़े नैतिक आदर्शों और मूल्यों को अपने व्यवहार में भी अपनाए। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'तरस आता है' में पौराणिक प्रसंग के सहारे इसी अंतर्विरोध को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कविता यह संकेत करती है कि परंपराओं के प्रति सम्मान केवल उनकी प्रशंसा करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उनके अंतर्निहित मूल्यों का अनुसरण करना भी आवश्यक है।

"मुझे तरस आता है/ उन पर
जो महाभारत पर गौरव करते हैं
और कौरव बने हुए हैं।"[10]

इस संदर्भ में महाभारत का उल्लेख न्याय और अन्याय के बीच होने वाले संघर्ष की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति को उभारता है। कवि ऐसे व्यक्तियों के आचरण पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत की महानता का बखान तो करते हैं, लेकिन व्यवहार में अन्याय, स्वार्थ और अनैतिकता को प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ 'कौरव' का प्रतीक इस नैतिक विसंगति को प्रभावशाली और तीक्ष्ण रूप में अभिव्यक्त करता है। कविता का मूल संदेश यह है कि परंपराओं के प्रति सच्ची निष्ठा उनके गौरव का प्रदर्शन करने में नहीं, बल्कि उनसे जुड़े नैतिक आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने में निहित है। इस प्रकार, कवि सांस्कृतिक चेतना को नैतिक आचरण और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ते हैं।

लोकतांत्रिक चेतना और असहमति का अधिकार- लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक सफलता केवल संस्थागत संरचनाओं के अस्तित्व पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और असहमति के प्रति समाज के दृष्टिकोण से भी निर्धारित होती है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'विरोध' इसी लोकतांत्रिक मूल्य को केंद्र में रखते हुए स्वतंत्र चिंतन और विरोध के अधिकार की महत्ता को रेखांकित करती है।

"विरोध करना
शत्रुता नहीं होती
अपने विचार को ताक़त से
रखना होता है।"[11]

इन पंक्तियों में कवि विरोध को नकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में देखने के बजाय उसे स्वस्थ संवाद और वैचारिक विमर्श की अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं। किसी विचार से असहमति व्यक्त करने का अर्थ यह नहीं है कि संबंधित व्यक्ति के प्रति शत्रुता का भाव रखा जाए। वस्तुतः तर्क, विवेक और स्वतंत्र चिंतन के आधार पर अपनी बात रखना सुदृढ़ लोकतांत्रिक संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। कवि के अनुसार, विरोध की भावना समाज में सुधार और सकारात्मक परिवर्तन की संभावनाओं को जन्म देती है, क्योंकि प्रश्नों के माध्यम से ही प्रचलित व्यवस्थाओं की विसंगतियों और कमियों को उजागर किया जा सकता है। समकालीन संदर्भ में इस कविता की प्रासंगिकता विशेष रूप से बढ़ जाती है, क्योंकि वर्तमान समाज में वैचारिक असहमति को कई बार व्यक्तिगत विरोध या शत्रुता के रूप में ग्रहण कर लिया जाता है।

श्रमजीवी स्त्री और आर्थिक विवशता- ब्रज श्रीवास्तव के काव्य में सामाजिक संवेदनशीलता का एक प्रमुख आयाम मेहनतकश आम लोगों के संघर्षपूर्ण जीवन का चित्रण है। उनकी कविता 'काम वाली बाई' घरेलू श्रम में संलग्न महिला के अनुभवों के माध्यम से श्रम की कठिनाइयों, आर्थिक विषमता और शारीरिक कष्टों जैसी गंभीर सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करती है।

"कमर दर्द से पस्त है/ तब भी बैठ जाती है
बर्तन माँजने के लिए/ आह भरकर।"[12]

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92–97

इन पंक्तियों में घरेलू कामगार महिला की विवशता और संघर्ष को सरल तथा संवेदनशील अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। शारीरिक कष्ट के बावजूद काम जारी रखने की उसकी परिस्थिति दर्शाती है कि आर्थिक दबाव कई बार व्यक्ति को अपनी पीड़ा की अनदेखी करने के लिए मजबूर कर देते हैं। कवि श्रम को केवल जीविका अर्जित करने का साधन मानकर सीमित नहीं करते, बल्कि उससे जुड़ी सामाजिक विषमताओं और मानवीय परिस्थितियों की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हैं। इस प्रकार, कविता पाठकों को घरेलू श्रमिकों के योगदान के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने तथा उनके साथ गरिमापूर्ण, न्यायसंगत और संवेदनशील व्यवहार करने की आवश्यकता का बोध कराती है।

सत्य, अफवाह और सामाजिक उत्तरदायित्व

सत्य और असत्य के मध्य अंतर्विरोध केवल व्यक्ति के निजी आचरण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव सामाजिक संबंधों और सार्वजनिक विमर्श पर भी पड़ता है। ब्रज श्रीवास्तव की कविता 'इल्ज़ाम उन पर है' में कवि उस प्रवृत्ति पर प्रहार करते हैं, जिसमें वास्तविक तथ्यों से परिचित होने के बावजूद उन्हें तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता है और उनके माध्यम से भ्रम फैलाया जाता है।

"कुछ छिपाने का इल्ज़ाम तो बिल्कुल ही गलत है
बल्कि इल्ज़ाम यदि है तो उन पर है
जो जान जाना चाहते हैं सच
और फिर फैलाना चाहते हैं झूठी बातें।"[13]

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सूचना और सत्य के संबंध में निहित नैतिक दायित्वों को उजागर करते हैं। किसी तथ्य को जानने की इच्छा स्वाभाविक है, किंतु जानबूझकर तथ्यों को गलत रूप में प्रस्तुत करना और झूठी जानकारी फैलाना समाज में विश्वास की भावना को क्षति पहुँचाता है। कविता इस बात पर बल देती है कि सत्य के प्रति प्रतिबद्धता का अर्थ केवल वास्तविकता से परिचित होना नहीं है, बल्कि उसके प्रति ईमानदार और उत्तरदायी दृष्टिकोण अपनाना भी है। वर्तमान सूचना-केंद्रित युग में यह विचार विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि अफवाहों और भ्रामक जानकारियों का प्रसार सामाजिक संबंधों में अविश्वास उत्पन्न करने के साथ-साथ सार्वजनिक संवाद की दिशा को भी प्रभावित कर सकता है।

भाषा, शैली और काव्य-शिल्प- ब्रज श्रीवास्तव के काव्य की प्रमुख विशेषताओं में सरल, सहज और संवादात्मक भाषा का प्रयोग उल्लेखनीय है। वे गंभीर सामाजिक समस्याओं और जटिल विचारों को आम जीवन से जुड़े शब्दों, प्रतीकों तथा बिंबों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। पृथ्वी को रोगग्रस्त रूप में चित्रित करना, बाजार को 'बहेलिया' के प्रतीक के रूप में देखना, मनुष्य को स्वयं अपना दस्तावेज मानना तथा विरोध को शत्रुता से अलग करके प्रस्तुत करना—ये सभी उदाहरण उनकी साधारण अभिव्यक्तियों में व्यापक अर्थ समाहित करने की क्षमता को दर्शाते हैं। उनकी काव्य-शैली में व्यंग्य का विशिष्ट स्थान है। उनका व्यंग्य केवल किसी व्यक्ति या व्यवहार का उपहास करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामाजिक संरचनाओं और प्रचलित व्यवस्थाओं में विद्यमान विसंगतियों को उजागर करने का माध्यम बनता है। 'तरस आता है' में पौराणिक प्रसंगों का प्रयोग, 'बहेलिया' में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति और 'सच बोला तो' में घटनाओं का क्रमिक विन्यास उनकी रचनात्मक दक्षता तथा शिल्पगत विशेषताओं को स्पष्ट करता है।इसके अतिरिक्त, उनकी कविताओं में अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता और विचारों की स्पष्टता भी विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

वे किसी विषय का अनावश्यक विस्तार करने के बजाय उससे जुड़े किसी विशिष्ट अनुभव या स्थिति के माध्यम से उसकी व्यापकता को सामने लाते हैं। इस शैली के कारण कविता का भाव और विचार सहज रूप से पाठक तक पहुँचता है। उनकी भाषा में लोकजीवन के अनुभवों, समकालीन सामाजिक यथार्थ और गंभीर वैचारिक दृष्टि का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इन विशेषताओं के कारण उनका काव्य पाठकों के जीवनानुभवों से निकटता स्थापित करता है और उन्हें सामाजिक यथार्थ पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

समकालीन संदर्भ में ब्रज श्रीवास्तव के काव्य की प्रासंगिकता

ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं की प्रासंगिकता उनके विषयों की समकालीनता और सामाजिक महत्त्व में निहित है। सत्य की प्रतिष्ठा और असहमति की स्वतंत्रता जैसे प्रश्न लोकतांत्रिक समाज की बुनियादी आवश्यकताओं से जुड़े हैं। इसी प्रकार, बाजारवाद की समीक्षा केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता से भी संबंधित होती है। पर्यावरणीय संकट प्रकृति के प्रति मानवीय दायित्वों की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जबकि 'काम वाली बाई' जैसी कविता श्रम की गरिमा और सामाजिक सम्मान के पारस्परिक संबंधों को समझने का अवसर प्रदान करती है।

इसी क्रम में, 'एक भी दिन' कविता भौतिक एवं तकनीकी प्रगति और मानवीय आचरण के बीच विद्यमान विरोधाभास को उजागर करती है। वहीं, 'हम अपने दस्तावेज' व्यक्ति के अंतर्मन, निजी अनुभवों और आंतरिक संसार के महत्त्व को सामने लाती है। विषयों की इस विविधता के बावजूद, कवि की केंद्रीय चिंता मनुष्य की गरिमा, संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों की रक्षा से जुड़ी रहती है।

ब्रज श्रीवास्तव की रचनाएँ किसी एक सामाजिक वर्ग या सीमित जीवनानुभव तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि व्यक्ति, समाज, प्रकृति और सामाजिक व्यवस्था के बीच स्थापित संबंधों पर विचार करने की व्यापक दृष्टि प्रदान करती हैं। इस दृष्टि से उनके काव्य का अध्ययन समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और नैतिक उत्तरदायित्व की अभिव्यक्ति को समझने के लिए विशेष महत्त्व रखता है।

निष्कर्ष- ब्रज श्रीवास्तव की काव्य-रचनाएँ समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक जागरूकता, मानवीय संवेदनशीलता और प्रतिरोध की चेतना को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करती हैं। उनकी कविताएँ दैनिक जीवन से जुड़े साधारण प्रसंगों और अनुभवों के माध्यम से व्यापक सामाजिक समस्याओं को उजागर करती हैं। सत्य के प्रति प्रतिबद्धता, वैचारिक असहमति की स्वतंत्रता, नैतिक दृढ़ता, श्रमशील वर्ग के प्रति सहानुभूति, प्रकृति संरक्षण की चेतना और मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा उनकी काव्य-दृष्टि के प्रमुख तत्त्व हैं।

'सच बोला तो' में सत्य की अभिव्यक्ति से जुड़ी कठिनाइयों, 'दुनिया का बदन' में पर्यावरणीय संकट, 'हम अपने दस्तावेज' में आत्मचेतना, 'एक भी दिन' में सभ्यता की प्रगति और हिंसक प्रवृत्तियों के बीच अंतर्विरोध तथा 'बहेलिया' में उपभोक्तावादी संस्कृति की आलोचना के माध्यम से कवि अपने व्यापक सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त करते हैं। इसी प्रकार, 'विरोध'

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92–97

स्वतंत्र चिंतन और लोकतांत्रिक मूल्यों की महत्ता को स्थापित करती है, जबकि 'काम वाली बाई' श्रमजीवी महिला के संघर्षपूर्ण जीवन और उसकी सामाजिक परिस्थितियों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है।

कवि की अभिव्यक्ति-शैली सहज, प्रभावशाली और अर्थपूर्ण है। वे प्रतीकों, व्यंग्यात्मक कथनों तथा सामान्य जीवन से ग्रहण किए गए बिंबों के माध्यम से गंभीर सामाजिक और नैतिक प्रश्नों को पाठकों के सामने रखते हैं। उनकी कविताओं में प्रतिरोध केवल विरोध प्रकट करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक आचरण में सुधार, नैतिक जिम्मेदारी के निर्वहन और मानवीय संबंधों में संवेदनशीलता की पुनर्स्थापना की आकांक्षा से भी जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ब्रज श्रीवास्तव का काव्य अपने समय की सामाजिक विसंगतियों और अंतर्विरोधों को उजागर करने के साथ-साथ पाठकों में उनके प्रति आलोचनात्मक दृष्टि भी विकसित करता है। उनकी रचनाओं की सार्थकता इस बात में निहित है कि वे मनुष्य को सामाजिक परिस्थितियों का मात्र निष्क्रिय पर्यवेक्षक मानने के बजाय उसे स्वतंत्र रूप से सोचने, प्रचलित मान्यताओं पर प्रश्न उठाने और अपने व्यवहार का आत्ममूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, उनका काव्य समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना, विवेकपूर्ण चिंतन, नैतिक प्रतिबद्धता और मानवीय संवेदना की केंद्रीय भूमिका को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित करता है।

****

संदर्भ-सूची

1. श्रीवास्तव, ब्रज। 'सच बोला तो'। रचना समय। गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 2026, पृ. 25।
2. श्रीवास्तव, ब्रज। 'दुनिया का बदन'। रचना समय। गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 2026, पृ. 26।
3. श्रीवास्तव, ब्रज। 'जो झूठ बोले अक्सर'। घर के भीतर घर। शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 97।
4. श्रीवास्तव, ब्रज। 'हम अपने दस्तावेज'। घर के भीतर घर। शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 99।
5. श्रीवास्तव, ब्रज। 'एक भी दिन'। हम गवाह हैं। बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2023, पृ. 106।
6. श्रीवास्तव, ब्रज। 'न सही'। हम गवाह हैं। बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2023, पृ. 107।
7. श्रीवास्तव, ब्रज। 'दो चार पागल हों'। आशाघोष। ज्ञान मुद्रा पब्लिकेशन, भोपाल, पृ. 79।
8. श्रीवास्तव, ब्रज। 'बहेलिया'। आशाघोष। ज्ञान मुद्रा पब्लिकेशन, भोपाल, पृ. 81।
9. श्रीवास्तव, ब्रज। 'आदिवासी'। समय ही ऐसा है। बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2022, पृ. 97।
10. श्रीवास्तव, ब्रज। 'तरस आता है'। समय ही ऐसा है। बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2022, पृ. 98।
11. श्रीवास्तव, ब्रज। 'विरोध'। रचना समय। गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 2026, पृ. 50।
12. श्रीवास्तव, ब्रज। 'काम वाली बाई'। रचना समय। गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 2026, पृ. 52।
13. श्रीवास्तव, ब्रज। 'इल्ज़ाम उन पर है'। घर के भीतर घर। शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 86।